जाया-पद-विमर्श:

डॉ॰ प्रयागनारायणमिश्र

जन् + यक् + टाप् के योग से निष्पन्न शब्द जाया का अर्थ पत्नी है इसके अनेक निर्वचन तथा व्युत्पत्तियाँ प्राप्त होती हैं। अथवा जनी प्रादुर्भावे धातु से निष्पन्न स्त्रीलिङ्गवाची जाया शब्द वेदों में अनेकशः प्रयुक्त है। जायेव पत्युः उशती सुवासा, जनीयते जायाम् तथा जायां जनित्री मातरं ये, जाया पत्ये मधुमती इत्यादि अनेक उदाहरण इसके प्रमाण हैं। (क्रमशः ऋ॰ वे॰ १०.७१.४, अथर्व ६.८२.२, ९.६.३ तथा ३.३०.२

ऐतरेयब्राह्मण ७.१३ के अनुसार

तज्जाया जाया भवति यदस्यां जायते पुनः।

शतपथब्राह्मण में अनेक उद्धरण हैं- (शतपथब्राह्मण १०.५.२.९

वीर्यवान् ह अस्माज्जायते। वीर्यवन्तमु ह सा जनयति

अर्थात् वीर्यवान् सन्तान इसी से उत्पन्न होती है। अथवा यह वीर्यवान् सन्तान को जन्म देती है इसी लिए यह जाया है।

गोपथब्राह्मण १.१.२ के अनुसार-

तद् यदब्रवीत् आभिर्वा अहमिदं सर्वं जनयिष्यामि यदिदं किञ्चेति, तस्माज्जाया अभवंस्तज्जायानां जायात्वं यच्चासु पुरुषो जायते।

अर्थात् इससे ही मैं सबकुछ उत्पन्न करूँगा। अतः जाया का जायत्व यही है कि इसी से सन्तानोत्पत्ति सम्भव है इसी लिए शतपथब्राह्मण ५.२.१.१० में प्रोक्त है-

अथ यदैव जायां विन्दते अथ प्रजायते

इसी अभिमत को स्मृतियों में विशदरूप से व्याख्यायित किया गया है-

पतिर्भार्यां संप्रविश्य गर्भो भूत्वेह जायते।

जायायास्तद्धि जायात्वं यदस्यां जायते पुनः॥ मनु॰ ९.८

अर्थात् पति वीर्यरूप से स्त्री में प्रवेशकर गर्भरूप में सन्तति के रूप में उत्पन्न होता है जाया का यही जायात्व है कि इससे पुत्रादि रूप में पति पुनः उत्पन्न होता है। इसी लिए स्त्रीपुरुष की सृष्टि का निरूपण करके जाया-संसर्ग से उसकी पूर्णता का प्रतिपादन किया गया है

Scanned with CamScanner

एतावानेव पुरुषो यज्जायाऽऽत्मा प्रजेति ह।
विप्राः प्राहुस्तथा चैतद्यो भर्ता सा स्मृताङ्गना॥
इसीलिए शतपथब्राह्मण ५.२.१.१० में प्रोक्त है
अथ यदैव जायां विन्दते अथ प्रजायते
अर्थात् जैसे ही कोई पुरुष जाया को प्राप्त करता है वैसे ही वह पुत्रादि के रूप में पुनः उत्पन्न होने योग्य हो जाता है इसीलिए ऐतरेयब्राह्मण में प्रोक्त है—
तज्जाया जाया भवति यदस्यां जायते पुनः॥ ऐ.ब्रा. ७.१३
इसी को कुल्लूकभट्ट ने विशद तथा विवेचित किया है
पतिर्जायां प्रविशति गर्भो भूत्वेह मातरम्।
तस्यां पुनर्नवो भूत्वा दशमे मासि जायते॥
तज्जाया भवति यदस्यां जायते पुनः।
तत्श्चासौ रक्षणीयेत्येतदर्थं नाम निर्वचनम्॥
अतः आत्मा वै पुत्रनामासीत् तथा आत्मनो जायते सूनुः इत्यादि वचनों की सार्थकता सिद्ध करते हुए शास्त्रोक्त विधि से पति को ही पुत्रादि के रूप में गर्भ-धारण-पोषण-संरक्षणादिपूर्वक जन्म देने वाली होने के कारण पत्नी को जाया कहते हैं। ध्यान रहे जाया का अर्थ स्त्री या अन्य नहीं होता है। जाया को ही प्राप्त कर व्यक्ति अपूर्णता से पूर्णता को प्राप्त करता है जैसा कि प्रोक्त है—
अर्द्धो ह वा एष आत्मनस्तस्माद्यज्जायां न विन्दते नैव तावत् प्रजायते, असर्वो हि तावद् भवति। अथ यदैव जायां विन्दतेऽथ प्रजायते तर्हि सर्वो भवति॥ (शतपथब्रा० ५.२.१.१०)
इसी लिए धर्मशास्त्र में पति-पत्नी की एकरूपता का संकीर्तन करते हुए जाया को सर्वथा आत्मस्वरूप मानकर उसे सर्वथा संरक्षणीय बताया गया है क्योंकि प्रयत्न-पूर्वक जाया अर्थात् पत्नी की रक्षा करता हुआ मनुष्य अपनी सन्तान, आचरण, कुल, आत्मा तथा धर्म की रक्षा करता है अतः जाया इन सब का सर्वस्वरूप है—
स्वां प्रसूतिं चरित्रं च कुलमात्मानमेव च।
स्वं च धर्मं प्रयत्नेन जायां रक्षन्हि रक्षति॥
मनुस्मृति ९.७